प्रायश्चित्त-प्रहसन

रूपनारायण पांडेय

Prayshchatt - Prahsan.

प्रायश्चित्त-प्रहसन

[श्रीयुत अमूल्यचरण नाग चौधुरी (नाट्य-भूषण) महाशय के "प्रायश्चित्त"-नामक प्रहसन के आधार पर लिखित]

लेखक

रूपनारायण पांडेय कविरत्न

R. N. Panday

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

नवंबर, १९२८

1928

तृतीयावृत्ति] [मूल्य ≡)

प्रकाशक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय
लखनऊ

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

वक्तव्य

बँगला के सुप्रसिद्ध लेखक श्रीयुक्त अमूल्यचरण नाग चौधुरी (नाट्य-भूषण) महाशय के "प्रायश्चित्त"-नामक प्रहसन के संपूर्ण आधार पर इस पुस्तक की रचना की गई है। इसके लिये उक्त महाशय के हम कृतज्ञ हैं।

हिंदी में "प्रायश्चित्त" नाम का एक नाटक निकल चुका है, इसलिये—नाम में अंतर रखने के लिये—हमने इसका नाम रक्खा है "प्रायश्चित्त-प्रहसन"।

आशा है, इस पुस्तक से पाठकों का मनोरंजन होगा।

प्रकाशक

नाटक के पात्र

मर्द

मिस्टर रामज़े (उर्फ़ रामजी)	...	विलायत से लौटा हुआ नवयुवक
प्रेमचंद	...	उक्त नवयुवक का मित्र
मूसलचंद	...	ज़मींदार और उक्त नवयुवक का पिता
स्वार्थदास	...	मूसलचंद का मुसाहब
साधुचरन	...	मूसलचंद का परोसी
विद्यादिग्गज	...	एक लोभी ब्राह्मण

साहबी ठाटवाले हिंदुस्तानी, एक फ़क़ीर,
बालकगण और दादाजी

औरतें

पेरीविंकिल	...	मिसेज़ रामज़े

ऐंग्लिसाइज़्ड स्त्रियाँ, देसी ढंग से रहनेवाली
स्त्रियाँ और बालिकाएँ

प्रायश्चित्त

पहला दृश्य

स्थान—सड़क

[एक तरफ़ से विद्यादिग्गज और दूसरी तरफ़ से स्वार्थदास का प्रवेश]

स्वार्थ०—प्रणाम दादा। कहिए, कैसे हैं?

विद्या०—जय हो भैया। कैसा हूँ, क्यों बताऊँ? हर घड़ी आयु क्षीण होती चली जाती है। जब तक साँस चलती है, ग़नीमत है!

स्वार्थ०—यह क्या आप कहते हैं? आपकी लाखों बरस की उमर हो! आपकी बलैया लेकर आपके शत्रु मरें।

विद्या०—बलैया-बलैया क्या करते हो भैया, बल्कि मलैया-मलैया कहो तो एक बात भी है। मलैया का नाम सुनकर आत्मदेव तृप्त हो जाते हैं और जीभ से लार टपक पड़ती है!

स्वार्थ०—और अगर साक्षात् सामने आ जाय?

विद्या०—हः-हः! फिर क्या कहना है! मगर आजकल

ऐसा घोर कलियुग आ गया है कि लोग बाप के सराध को भी ब्राह्मण-भोजन नहीं कराते ! कोई बड़ा सपूत हुआ, तो वह पाव-भर आटे का सीधा दे देता है !

स्वार्थ०—अच्छा दादा, कचौरी कैसी लगती है ?

विद्या०—यह भी अच्छा पदार्थ है ! सुना नहीं, "शष्कुलीशब्दमात्रेण किं दूरं योजनत्रयम् ?" पहले कचौरी को 'शष्कुली' कहते थे। एक दिन एक कंपाज़ीटर ने 'क' टाइप चुराकर उसकी शष्कुली लेकर खाई, तभी से उनका नाम 'क-चोरी' पड़ गया। ये सब ऐतिहासिक बातें हैं भैया, हरएक इन्हें नहीं जानता।—आँखें फाड़-फाड़कर क्या मुझे देख रहे हो; विद्या-बुद्धि तो नए चावल के माड़ की तरह उबली पड़ती है; लेकिन कुछ कर नहीं पाता, बस, यही दुःख है ! ऐसा घोर कलिकाल आ गया है कि कहीं पुण्य-दान का नाम भी नहीं सुन पड़ता ! उस दिन एक बढ़ई को जनेऊ पहनने की व्यवस्था देकर २५) रु० पाए थे; उन्हीं से महीने-भर गुज़र किया। अब पास एक पैसा नहीं है—कल चूल्हे पर हाँडी चढ़ने का सहारा नहीं है—सोलहो दंड एकादशी है !

स्वार्थ०—उसके लिये कुछ चिंता न कीजिए। आप एक काम कर सकते हैं ?

विद्या०—बताओ भैया, क्या काम है ? संसार में ऐसा कोई काम नहीं, जो विद्यादिग्गज के लिये असाध्य हो—लेकिन हाँ, दक्षिणा भरपूर चाहिए—

भवेत यदि ब्राह्मणकुमारं,
स्यात् सर्वकार्यपारगम्;
किंचित् दक्षिणां यदि प्राप्तं,
करिष्यति चंडीं चमारशुद्धिं चोरीं च।

इति चाणक्यः

क्या करना होगा, बताओ न भैया, शास्त्र की दोहाई देकर मैं सब कर सकता हूँ। (चोटी पर हाथ फेरकर) देखते हो, यह गोपुच्छ-तुल्य शिखा ऐसी है कि इसके बल से चाहे जितना बड़ा कुकर्म करो, सब हज़म ! और इस जनेऊ की भी लीला अपार है। मौलवी मिस्टर मंडूक शास्त्री ने लिखा है—

अस्ति गोदावरीतीरे उपवीतशिखाद्वयम्;
सर्वदुःखं पापतापं हन्यते तत्क्षणं स्वयम्।

इति रागसर्वस्वसारः

बोलो भैया, क्या काम है ? चटपट बोलो। यहाँ पेट में कुड़कुड़ी हो रही है !

स्वार्थ०—ऐसा कोई कठिन काम नहीं है। यही मूसलचंद ज़मींदार का लड़का जो विलायत गया था, वह लौटकर

आया है। प्रायश्चित्त के बिना जातिवाले उसे बिरादरी में लेने को राज़ी नहीं हैं। सो उसी के लिये प्रायश्चित्त की व्यवस्था देनी है, और शायद आप ही को प्रायश्चित्त भी कराना होगा।

विद्या०—वाह-वाह! शावाश! ऐसे ही धर्मात्मा लोगों से तो धरती टिकी है। धन्य-धन्य! मैं ज़रूर व्यवस्था दूँगा। ऐसी व्यवस्था दूँगा कि कोई दूसरा दे ही न सके! एकादशी-माहात्म्य और सत्यनारायण से लेकर गरुड़पुराण तक सब शास्त्रों के वचन उसमें लिख दूँगा। आजकल ऐसा घोर कलिकाल आ गया है कि कोई ब्राह्मणों को पूछता ही नहीं। धन्य हो मूसलचंद! तुम्हारे माता-पिता धन्य हैं, जिनके ऐसा धर्मात्मा बेटा पैदा हुआ!

स्वार्थ०—मगर इस मामले में एक पेंच है, नहीं तो व्यवस्था कब की मिल गई होती, और प्रायश्चित्त भी हो गया होता। वह लड़का विलायत से एक अधेड़ मेम को, ब्याहकर, साथ ले आया है। इसी से मूसलचंद की बिरादरी के पंच और चौधरी बिगड़ खड़े हुए हैं, और पंडित भी कोई व्यवस्था देने को राज़ी नहीं होता।

विद्या०—ऊँ:! पंडित सब साले मूर्ख हैं! सुना नहीं, बाम्हन का लडका साठ बरस तक पोंगा रहता है, और फिर सठिया

जाता है ! उन सालों ने तो कोदो देकर विद्या पढ़ी है। मुझे जानते हो, मैंने धन्नी में लटकी हुई रस्सी में बदस्तूर चोटी बाँधकर, ८० बरस तक, स्मृति और धर्मशास्त्र पढ़ा है ! और पंडित क्या मेरी बराबरी करेंगे ? कुछ डर नहीं है; मैं व्यवस्था दूँगा। मेम से व्याह किया है तो क्या हुआ ? श्वेतांग भी तो आर्यों ही के वंशज हैं। मैं यह बात कर्म-विपाक और सुदामा-चरित्र से साबित कर दूँगा। शांति-जल से सब शुद्ध हो जायगा। शांति-जल का ऐसा प्रभाव है कि शूकर का मांस भी, उसे छिड़क देने से, मृग-मांस हो जाता है। रही पंचों के राजी होने की बात, सो वे तो भैया ५ बोतल शराब और पँच-मेल मिठाई की दावत देते ही चरण चाटने लगेंगे। समझे ? शुद्धि-तत्त्व का वचन है कि—

पापं गोमांसभक्षणस्य पापं कृस्तानीविवाहस्य;

ब्राह्मणं दक्षिणां दत्वा शान्तिजलेन शोधयित्वा परिव्रजेत्।

इति अहिरावणः

स्वार्थ०—अगर आप यह प्रायश्चित्त करा सकें, तो अच्छी तरह मुट्ठी गरम हो जायगी।

विद्या०—प्रायश्चित्त तो मैं जरूर ही कराऊँगा। सनातन-धर्म के अनुसार न होगा तो आर्य-समाज की रू से कराऊँगा। मेरी इस प्रतिज्ञा को तुम भीष्म-प्रतिज्ञा समझो भैया। हिंदू-धर्म

की रक्षा के लिये मुझे यह काम करना ही होगा। मूर्ख पंडित साले ऐसे कामों में टाँग अड़ाकर धर्म का विनाश करने बैठे हैं। नारायण-नारायण! तुमसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। ईश्वर तुम्हें लाखों बरस की उमर दें।

स्वार्थ०— इस बैरंग आशीर्वाद से काम नहीं चल सकता दादा। तुम्हारी तो मुट्ठी गरम होगी और मैं क्या कोरा आशीर्वाद लेकर चाटूँगा? तुम्हारे तो सात ख़ून माफ़ हैं—पेट भरके छकोगे, एक पत्तल बदस्तूर बाँधोगे और कुछ नक़द भी हथियाओगे। और मैंने इतनी सिरमग़ज़न की, मुझे क्या मिलेगा?

विद्या०—(हँसकर) अभी बच्चे हो न, अरे भाई! मैं क्या ऐसा बेवकूफ़ हूँ कि तुमको यों ही रहने दूँगा। सुनो, ब्रह्म-भोज के दिन का सब सामान तुम्हारी ही मार्फ़त मँगवाऊँगा—उसमें कुछ काट-पीट और कुछ दस्तूरी, समझे! इतने में भी पेट न भरे, तो पाँच रुपए सैकड़े के हिसाब से मुझसे भी ले लेना। अब तो ख़ुश हो?

स्वार्थ०—बंदोबस्त तो आपने ठीक किया, मगर अभी कुछ कसर है। आपसे मुझ पचीस रुपए सैकड़े के हिसाब से मिलना चाहिए। देखिए, आपके परोस में जो गड़बड़ व्यास रहते हैं, वह मुझे आधा तक देने को राजी हैं। मगर आप

मेरे साले के ससुर हैं—सगों में हैं, इसी से मैं घाटा उठा-कर भी आप ही को यह काम देना चाहता हूँ।

विद्या०—(मन में) साला कैसा चंट है! पचीस रुपए सैकड़ा ही दूँगा—आमदनी अच्छी होगी। (प्रकट) गड़बड़ व्यास चमारों की पंचायत में सत्यनारायण की कथा बाँचने के सिवा किसी काम का नहीं है भैया। उसे ले जाकर क्या अपनी भद करवाओगे? तुम अपने ही हो, जो चाहे ले लेना।

स्वार्थ०—'जो चाहे सो ले लेना' की जरूरत नहीं, साफ़ व्यवहार अच्छा होता है।—अच्छा तो अब आप जाइए। किसी दिन मैं आपको ले चलूँगा।

विद्या०—अरे किसी दिन क्या, आज अभी चले चलो। शास्त्र में लिखा है—शुभस्य शीघ्रं अशुभस्य सीताहरणम्। क्या जानें, देर करने से मूसलचंद लुढ़क जाय, और बेटा प्रायश्चित्त न करे!

स्वार्थ०—इतनी जल्दी करने से काम नहीं चल सकता। मैं मूसलचंद से मिलकर मिलने का दिन ठीक कर लूँ, तब आपको ले चलूँ।—मगर ज़रा उस दिन पंडिताइन की उस रेशमी सारी की पगड़ी बाँधकर खूब लंबा तिलक लगा लेना, जिसमें देखते ही मूसलचंद के हृदय में भक्ति का बंबा खुल जाय!

विद्या०—चंबे की कल घुमाना तो तुम्हारे ही हाथ में है ! उसके सिवा ये सब बातें मैं खूब जानता हूँ; इतनी अवस्था हुई, अब तक किया ही क्या है ? मगर हाँ देखो, गड़बड़ व्यास के फेर में पड़कर सब काम चौपट न कर देना।

स्वार्थ०—आपकी भी क्या बातें हैं ? गड़बड़ व्यास ही को ले जाना होता, तो मैं आपसे क्यों कहता ? आप कुछ चिंता न कीजिए—यह शिकार आप ही का है।

विद्या०—तुम्हारे रहते मुझे रत्ती-भर चिंता नहीं है।—अच्छा अब चलता हूँ। सुना है, किसी कलवार ने भारी ब्रह्मभोज किया है। वहीं जाता हूँ, एक पत्तल और चार पैसे का सहारा है।

स्वार्थ०—अच्छा, प्रणाम।

विद्या०—जीते रहो भैया ! हरि हे मधुसूदन, तुम्हीं सत्य हो।

(प्रस्थान)

स्वार्थ०—सैकड़ों चमरगिद्ध देखे, मगर इस बुड्ढे से बढ़कर नहीं। ओः ! कैसी बुद्धि है ! बीरबल का बाप और सर आइज़क न्यूटन (Sir Isac Newton) का नाना है ! ये डेंजर सिगनल (Danger Signal) और सूत की चपरास डालकर चाहे जो करें, सब माफ़ ! जो हो, मेरी

अच्छी टही लग गई । प्रायश्चित्त की व्यवस्था ला देने पर सौ रुपए मूसलचंद ने देने को कहे हैं ; ब्रह्मभोज का सामान लाने में आधी रक़म उसकी भी हड़प करूँगा—और इस बुड्ढे खूसट से जो बटा लूँगा, वह घाता होगा ! हाः-हाः-हाः !

(प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

स्थान—यंग मेंस एसोसिएशन का भवन

[साहबी ठाट में कुछ नौजवानों और उनकी स्त्रियों का प्रवेश और गाना]

गीत

मर्द—कम लेडी, कम लेडी, कम टू मी;
औरतें—मत बोलो, मत बोलो, बहलावें जी ।
मर्द—ए जी आओ इधर तो,
औरतें—बस जाओ जी घर को,
मर्द—भूल हुई जो रक्खा हमने साहब का बाना;
औरतें—घूँघट खोलो, जूती पहनो, लेडी बन जाना ।
मर्द—अँगरेज़ों का खाना खाकर किया है मारल करेज;
औरतें—गाउन पहनो, लहँगा छोड़ो, और करो अब मैरेज ।
मर्द—अरे बाप रे, अरे बाप रे, कैसा सत्यानास;

औरतें—अब तो अपने मन के माफ़िक पूरी कर लो आस।
मर्द—नाक न काटो, नाक न काटो, पैरों पड़ते हैं हम सब;
औरतें—आज़ादी में दख़ल न देना, होगा नहीं ग़ज़ब।

(गाते-गाते औरतों का प्रस्थान और
मर्दों का उनके पीछे जाना)

तीसरा दृश्य

स्थान—ड्राइंग रूम

[मिस्टर रामजे और प्रेमचंद्र बैठे हैं]

प्रेम०—क्यों जी, पेरीविंकिल कहाँ गई, अभी नहीं आई ?

रामजे—आती ही होगी। She has gone to have a stroll in the Victoria Park. उस Old fool ने क्या लिखा है, जानते हो ? लिखा है, "भैया पराछित्त करके घर में आकर रहो।"

प्रेम०—Never never, प्रायश्चित्त cowdung eating है। Savage idea है।

रामजे—अरे पागल हुए हो क्या ? I am beyond such superstitions. देखो, पेरीविंकिल के आने पर तुम अँगरेज़ी में ही बातचीत करना।

प्रेम०—भाई, मुझे अँगरेज़ी बोलने का वैसा अभ्यास नहीं है, यह तो तुम जानते ही हो। हाँ, खिचड़ी अँगरेज़ी बोलकर काम चला सकता हूँ।

रामजे—वही सही, मैं उसे यहाँ की Indian English कहकर टाल दूँगा।—वह शायद पेरीविंकिल आ गई—जूते की आहट उसी-की जैसी है। हाँ, अब ज़रा सँभलकर बैठ जाओ।

प्रेम०—तुम्हारा तो भाई, वही हाल है कि—"तन में जान आ गई पाँव की आहट सुनकर।"

रामजे—चुप-चुप।

(पेरीविंकिल का प्रवेश)

पेरी०—I'm a little bit too late—

रामजे०—Ah ! never mind I would be glad to introduce my friend Mr. Prame Chander to your beauty. He is a bar-at-law.

पेरी०—I see, I see, (They shake hands). Ah ! your hand's are velvety soft. The tiny fingers are softer than us women !

रामजे—Yes the Indians are more than women !

पेरी०—Ha !-ha !! Now let us have a dance new friend !

प्रेम०—Sorry, I have got one of my-my-my—

पेरी०—What does he say ?

रामजे—He is sorry, he cannot dance.

पेरी०—Ah ! never mind ! You just sing and I'll dance. Merry !

रामजे—He doesn't know English melody.

पेरी०—What does he know then !

रामजे—Of course he knows their own.

प्रेम०—Ah-ah—

रामजे—अरे गा सको या न गा सको, जो कुछ याद हो, वही चिल्लाने लगो।

पेरी०—In the book I read of the cucoo songs of India. Delightful ! You just sing one for me.

प्रेम०—(स्वगत) यह तो जान के पीछे ही पड़ गई देख पड़ती है ! क्या करूँ, गीत-सीत तो कुछ याद ही नहीं। अच्छी बात है, मैं भी जो मुँह में आता है, वही बकता हूँ—

पेरी०—Just sing one and I shall dance.

प्रेम०—Alright. Then let us begin.

(पेरीविकल का नाचना और प्रेमचंद का गाना)

गीत

आने को मैंने उनसे कहा झोपड़ी में कल ;
साला दमाद कर गया मुझको फ़क़ीर ही ।
कैसे शरम की बात सुनाऊँ तुम्हें भला ;
जलकर जिगर कबाब हुआ यार के बिना ।
बढ़िया नदी में आ गई घर-बार बह गया ;
कोयल की कूक और पपीहे की तान है ।
गूलर का फूल फूल उठा, पत्तियाँ झड़ीं ;
आ करके नाव भिड़ गई गंगा के घाट में ।
जंजाल हो गई है मोहब्बत, मैं क्या करूँ ?
तिर्छी नज़र से देख लो अब शाम हो गई ।
हमदम जो धम से कूद पड़ा छत से राह में ;
मैं खिलखिला के हँस उठा, मुर्ग़े ने बाँग दी ।

(सब ज़ोर से हँसते हैं)

पेरी०—Keep it up ! Keep it up !! Brave friend ! Capital !

प्रेम०—ऐं, न गाऊँ ? अच्छा नहीं लगता शायद ?

रामज़े—ना, ना, Keep it up—याने चले चलो । तुम्हारा गाना कुछ बुरा नहीं है यार ; और कुछ यही अंट-संट गा दो ।

(प्रेमचंद गाता है)

दादरा

मेरी बीबी को कैसी सनक हो गई ;
हाय उसकी समझ भी कहीं खो गई।

दो०—हवा किसी की देह में जो उसके लग जाय ;
भर-भर कर कलसे बड़े घंटों ख़ूब नहाय।
किसी लेडी को लाऊँगा यह जो गई ;
मेरी बीबी को कैसी सनक हो गई।

दो०—घर-भर गोबर लीपती, दिन-भर पूजा-पाठ ;
धोती धोती दस दफ़े, रखे अँगोछे आठ।
किसी लेडी को लाऊँगा यह जो गई ;
मेरी बीबी को कैसी सनक हो गई।

पेरी०—Keep it up! Keep it up!!

रामजे—Capital! Capital!

प्रेम०—Max! Max!

दो०—जान ज़ीक में हो गई अब तो सहा न जाय ;
इसे छोड़ दूँ, बस यही, जी में रही समाय।
किसी लेडी को लाऊँगा यह जो गई ;
मेरी बीबी को कैसी सनक हो गई।

रामजे—Now let us have a peg. Merry!

पेरी०—Yes, let us drink the health of our new friend.

सब—(शराब ढालकर) Good health.

(पीते हैं)

प्रेम०—I would like to hear one silvery note from Mrs. Ramsay if her beauty need not mind.

पेरी०—Ah ! never mind ! never mind !

(पेरीविंकिल का गीत)

Organ clink clink clink,
Britain's good only think.
Come, Oh Nightingale,
Sing from vale to vale,—
Britain's good only think,
Only think only think.

(परदा बदलता है)

चौथा दृश्य

रंगीन परदा

[झंडा हाथ में लिए ऐंग्लिसाइज़्ड (Anglisised) रमणियों का प्रवेश और गीत]

गीत

हम हैं सब न्यू जेनरेशन;
करेंगे मादर-कंट्री का साल्वेशन। (हुर्रे)

काहे का अब हमें केयर;
अब तो लगावें अपना शेयर—
इन दी कंट्रीज़ ऐडमिनिस्ट्रेशन ॥ (हुर्रे)
पर्वा रखें नहीं साहब की,
आँखें डालें बड़े ग़ज़ब की,
उसी से होगा (उनके) जिगर के भीतर पैल्पिटेशन ॥ (हुर्रे)
होने ही से पैलपिशन।
होगा फिर सिर का रोटेशन,
उसी से होगा हिंदुस्तानी एडोशन। (हुर्रे)
सुरेन बनर्जी क्या करते हैं,
दाढ़ी हिला-हिला मरते हैं,
हम लग जातीं, तुर्त मिटातीं पार्टीशन ! (हुर्रे)
माना जाता वह न सिडीशन।
(हुर्रे !—माना जाता वह न सिडीशन !!)

(सबका गाते-गाते प्रस्थान)

(परदा बदलता है)

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—मूसलचंद का घर

[विद्यादिग्गज और स्वार्थदास का प्रवेश]

विद्या०—क्यों भैया, लालाजी अभी नहीं आए ?

स्वार्थ०—बस अब आते ही हैं। देखिए, आप जरा गंभीर बने रहिएगा और इस ढंग से बातचीत कीजिएगा, जिसमें लाला के मन में भक्ति उबल पड़े।

विद्या०—यह कुछ मुझे सिखाने की जरूरत नहीं है भैया। इस मामले में मैं खुद महाकवि कालिदास हूँ।

(मूसलचंद का प्रवेश)

विद्या०—स्वागतं स्वागतं! जयस्तु! जयस्तु!

मूसल०—(साष्टांग प्रणाम करके) प्रभू, पराछित की बेवस्था दीजिएगा क्या?

स्वार्थ०—महाराज, दया कीजिएगा क्या?

विद्या०—नारायण, श्रीमधुसूदन, भवभयहारी!

मूसल०—महाराज, आप ही उबारेंगे।

स्वार्थ०—पंडितजी, आप जो चाहें कर सकते हैं।

विद्या०—भगवान् को याद करो, वही उद्धार करेंगे।

मूसल०—आप ही भगवान् हैं मेरे लिये तो।

विद्या०—सो तो है ही, सो तो है ही। हरि हे मधुसूदन!

मूसल०—तो फिर क्या करना होगा पंडितजी?

विद्या०—करना क्या होगा। शांतिजलेन शोधयित्वा परिव्रजेत्। प्रायश्चित्त करना होगा।

मूसल०—(पैर पकड़कर) धन्न हैं आप!

विद्या०—अखंडमंडलाकारं की कृपा से सब हो जायगा।

मूसल०—(स्वार्थदास से) यह किस चीज़ का नाम पंडितजी ने लिया?

स्वार्थ०—पंडितजी कहते हैं, कुछ रुपए खर्च होंगे।—सो उसकी क्या चिंता है महाराज। आप लोगों को तो कुछ दक्षिणा देनी ही चाहिए। ब्राह्मण को दिए बिना कहीं कोई काम होता है! (मूसलचंद से) बाबूजी, पंडितजी को कुछ नगदी दे दीजिए; यह सब गड़बड़ मिटा देंगे। कड़वे तेल में भूनने से जैसे मछली की दुर्गंध रफूचक्कर हो जाती है, वैसे ही पंडितजी को कुछ धन देने से सब पाप नौ-दो-ग्यारह हो जाते हैं। शायद शास्त्र में इसकी सैकड़ों नज़ीरें होंगी—

विद्या०—हज़ारों—लाखों—करोड़ों—संखों। भरतशिरोमणि ने लिखा है—

मालिन्यं जलेन,
पंथाः वातेन;
शीतः उष्णेन,
सर्वपापं कांचनेन।

इति विदग्धमुखमंडनम्

रात-रात-भर जगकर और पसेरियों तेल जलाकर ये बातें सीखी हैं भैया।

स्वार्थ०—सो तो है ही। आपने धुनिए की तरह शास्त्रों को धुनककर ये बारीक बातें निकाली हैं।

विद्या०—श्लोक तो बहुत लोग जानते हैं, लेकिन इस तरह के बीजमंत्र कितने लोगों को मालूम हैं?

मूसल०—महाराज! मेरी तक़दीर बहुत जबरदस्त थी, जो आपके चरनों की धूल मेरे घर में पड़ी। अब बस दया करके पराछित करा डालिए।

विद्या०—साधु-साधु! लिखा ही है, दयां कुर्वन्ति साधवः।

स्वार्थ०—चिंता क्या है लालाजी। ऐसे नंबर एक के ख़ालिस ब्राह्मण आपके सहायक हैं—आप क्यों ऊबते हैं? बस, अब भैया के आने-भर की देर है।

मूसल०—वह आता ही होगा।—अच्छा पंडितजी, बताइए, क्या-क्या सामान चाहिए?

विद्या०—सामान कुछ बहुत नहीं चाहिए। क्योंकि समय संक्षेप है—लग्न के भीतर ही काम होना चाहिए। अच्छा एक काम करो, पाँच-सात सौ रुपए लाकर यहाँ रख दो। वे रुपए ही सामान के मूल्य-स्वरूप ब्राह्मण को देने से "सर्वकर्मसिद्धमस्तु" हो जायगा। भट्टारकस्मृतितंत्र में महर्षि बाणभट्ट ने लिखा है—उद्देशे ब्राह्मणाय काञ्चनं दत्वा भूरिभोजनं कारयेत्।

(मि० रामजे का प्रवेश)

रामजे—फ़ादर, टुम बुलाया था, हम आया है। टुमारा हेल्ठ कैसा है ?

(विद्यादिग्गज उठकर रामजे के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देना चाहता है)

रामजे—डूर-डूर ! टुम शाला यह क्या करने माँगटा ?

विद्या०—भैया चिरंजीव ! (रामजे के सिर पर हाथ रखता है)

रामजे—Out you devil !

मूसल०—भैया, यह सास्तरीजी हैं ; इनको पैलगी करो।

रामजे—Good morning टायगर !

मूसल०—यह क्या करते हो ? इस तरह नहीं—पैरों पर सिर रक्खो भैया।

विद्या०—साधु-साधु ! (अपने पैरों की रज उसके सिर में लगाना चाहता है)

रामजे—(झिड़ककर) What ! Ambitious brute ! Get thee behind me Satan ! Thou shalt worship only the Lord thy God and Him only serve. फ़ादर Sir, उस टरह का वर्ड मट बोलो।

मूसल०—भैया, बड़ी मुशकिल से ऐसे लायक़ पंडित मिले हैं ! पराछित करके हिंदू बन जाओ।

रामजे—Damn your Humbugism !

मूसल०—(खीझकर) यह तू क्या गिटपिट-गिटपिट कर रहा है—कुछ समझ में नहीं आता।

विद्या०—प्रायश्चित्त करने में हर्ज क्या है बाबू! बस, शान्ति-जलेन शोधयित्वा परिव्रजेत्।

रामजे—Stop you block head! Am I a babu?

स्वार्थ०—बाबू क्यों, स्वदेशी श्रीयुत कहिए न पंडितजी!

विद्या०—हाँ-हाँ, श्रीयुत—श्रीयुत!

रामजे—Damn your Srijut!

(पेरीविकिल का प्रवेश)

पेरी०—Is this your visiting—

रामजे—Excuse me (बाप से) हम जाटा है।

मूसल०—पराछित कर ले भैया! इसे नहीं छोड़ सकता, तो पराछित करने के बाद क़सबी की तरह अलग एक घर में रख लेना—बिरादरी में तो मिल जा!

रामजे—No, I won't hear. हम वह बाट नहीं सुनना माँगटा।

मूसल०—अरे बेटा, पराछित कर डाल! नहीं तो तेरा बूढ़ा बाप पिंड नहीं पावेगा!

विद्या०—हाँ-हाँ—ठीक कहा—

पुत्रं पिण्डप्रयोजनम इति कोविम्वराजः।

पेरी०—Shame to you ! you are the son of such a brute !

रामजे—Black devil ! for thee only I am insulted thus by my wife—

(जाना चाहता है)

मूसल०—जाना नहीं रे, नहीं तो मैं पिंड नहीं पाऊँगा !

विद्या०—बेशक, पुत्रं पिण्डप्रयोजनम् ।

रामजे—(घूमकर) अच्छा हम पिंड डिए जाटा है। (पंडित की चोटी पकड़कर) come टुम मंटर पढ़, हम पिंड डेटा है !

विद्या०—अरे-अरे बापरे ! मर गया ! चोटी उखड़ी— छोड़-छोड़ रे ! प्रायश्चित्त कराने से मैं बाज आया बाबा, मुझे छोड़ ! उहूहू ! ओ बाबा !—

रामजे—Now done ? मंटर पढ़ लिया ? अच्छा, अब पिंड डेटा हूँ ।

पेरी०—Hold ! hold husband ! what are you doing !

रामजे—Now to your पिंड (सामने रक्खे हुए कलश को लात से फोड़कर) बस, अब Good-bye, funeral rites are done I think (विद्यादिग्गज

भाग जाता है) Shall give you a sumptuous पिंड in the hotel there.

(पेरीविंकिल-सहित प्रस्थान)

मूसल०—(स्वार्थदास से) पाजी क्या कह गया ?

स्वार्थ०—आपसे क्या कहूँ बाबूजी ! आपके सामने कलश तोड़कर कह गए कि "यह तो क्रिया-कर्म हुआ, और अब होटल में जाकर पिंड देता हूँ।"

मूसल०—हूँ ! अच्छा मेरे लेखे वह भी मर गया ! मेरी जायदाद में भी उसका कुछ हक़ नहीं रहा। कल ही दूसरा लड़का गोद लूँगा। वह साला उसी क़सबी को लेकर रहे !

(परदा बदलता है)

छठा दृश्य

देसी ढंग से रहनेवाली स्त्रियाँ

गीत

गिटपिट-सिटपिट बोली बोलें, मुँह से धुआँ उगलते हैं ;
हैट-कोट-पतलून पहनकर अकड़-अकड़कर चलते हैं।
रंग नहीं गोरा होता, पर दिन-भर साबुन मलते हैं ;
नक़ली साहब छुके बरॉंडी लेडी लिए टहलते हैं।
"मा तो है बस नर्स", हाय ये कैसे वचन निकलते हैं ?
पूज्य पिता को 'ओल्ड फ़ूल' कह, उनसे जी में जलते हैं।

जोड़ को सर्वस्व समझते, पंखा लेकर झलते हैं ;
बंदर हैं ये ठीक, उन्हीं से बिल्कुल मिलते-जुलते हैं ।

(दूसरे दल का प्रवेश)

गीत

डर क्या है ? दो दिन में, देखो, कौन राह ये चलते हैं ;
देखोगी, अपनी करनी पर आप हाथ ये मलते हैं ।
जब तक पैसा पास, तभी तक ये सब ख़ूब उछलते हैं ;
ठोकर खाकर जो गिरते हैं, पीछे वही सँभलते हैं ।
देसी हैं ये, देसी होंगे, इसी देश में पलते हैं ;
कहीं आम के पेड़ों में भी फल बबूल के फलते हैं ?

(परदा बदलता है)

सातवाँ दृश्य

स्थान—सड़क

[प्रेमचंद और पेरीविंकिल]

प्रेम०—Those that have fleet steeds must follow Have you taken your ornaments with you ?

पेरी०—Yes, and besides one thousand Rupees in my bag.

प्रेम०—Bravo ! the dupe is fully cheated; now let us slip in a wink.

पेरी०—No, no hurry-scurry. What do I care? English ladies have divorce on their behalf.

I will marry thee what I care.
Savage son of a savage mare.
Can e'er be a husband dear?
I'll marry thee, come, no fear.

(रामजे का प्रवेश)

रामजे—Lo ! what's the matter ! where are you going with your—

पेरी०—Going to Jericho.

रामजे—Seeing is believing but feeling is the nacked truth ! I saw, I heard, and now I feel ! Bitter, bitter, than Death ओ !

पेरी०—Adiew, my late husband !

रामजे—ओः ! (लंबी साँस लेता है)

पेरी०—Ding dong, ding done ding.

Let us change—,change our ring.

(प्रेमचंद के साथ पेरीविंकिल का प्रस्थान)

रामजे—ठीक हुआ ! खूब हुआ !—capital ! कौआ मोर के पंख लगाकर कितने दिन रह सकता है ! हिंदोस्तानी आदमी साहब बनकर कब तक रह सकता है !

पाप का प्रायश्चित्त हो गया ! खूब हुआ ! चलूँ, पिताजी के पास जाकर उनसे माफ़ी माँगूँ । मैं कुपूत हूँ, मगर वह तो लायक़ बाप हैं । जब जगदीश्वर भी पापी पर दया करते हैं, तो क्या पिताजी मुझे नहीं माफ़ करेंगे ? मेरी दुर्दशा देखकर क्या उन्हें तरस नहीं आवेगा ? मैं पिताजी के पैर पकड़कर रोऊँगा, और सच्चे जी से क्षमा-प्रार्थना करूँगा। मुझे विश्वास है कि वह मेरा अपराध क्षमा कर देंगे ।—ओः ! कलेजे के भीतर जैसे कोई भाले चला रहा है !—जैसा काम किया, वैसा ही फल पाया !—अब मैं सच्चा प्रायश्चित्त करूँगा ।

(प्रस्थान)

(एक फ़क़ीर का प्रवेश)

गीत

अरे मन, क्यों न भजे हरि-नाम ?
पुत्र-पिता, पति-पत्नी किसके, जिनका बना ग़ुलाम ;
पड़े रहेंगे यहीं एक दिन धरा धेनु धन धाम ।
जिन पर भूला फूला फिरता फिर-फिर आठो याम ;
वे सब हैं क्षण-भंगुर, जड़, ज्यों जाड़े का है घाम ।
अंत समय में सिवा धर्म के आवेगा क्या काम ;
भवसागर के पार उतरना चाहे, तो भज राम ।

(परदा बदलता है)

आठवाँ दृश्य

रंगीन परदा

[बालक-बालिकाओं का प्रवेश]

गीत

मुर्ग़ी के अंडे चक्खेंगे, हलवा-पूरी छुएँ नहीं ;
मुँह पोछेंगे रूमालों से, हाथ न धोवें कभी कहीं।

बालक—सैंडो कसरत खूब करेंगे चलें फुलाकर छाती हम ;
ब्रांडी पाकर त्योरी तानें, समझेंगे हम हैं रुस्तम।

बालिका—हम करेंगी रोप डैंसिंग,

बालक—हम सीखेंगे सोर्ड फैंसिंग,
लुकी-लुकैया, ऊँचा-टीला, खेल न ये मन भावेंगे।

दादाजी—(प्रवेश करके)
एकी थप्पड़ में मनसूबे मिट्टी में मिल जावेंगे।

बालक—अँगरेज़ों की चाल चलेंगे,
हिंदुस्तानी नाम न लेंगे,
हम मिस्टर बैरिस्टर बनकर दाढ़ी-मूछ मुड़ावेंगे।

दादाजी—तभी तुम्हारे पीछे दुम भी साहब लोग लगावेंगे।

—अरे चलो-चलो, देर हो गई; ठंडा पुलाव और ब्रिजल रोस्ट चलकर खाओ।

(सबका प्रस्थान)

(परदा बदलता है)

नवाँ दृश्य

स्थान—मूसलचंद का घर

[मूसलचंद और साधुचरन]

मूसल०—साधु भैया, मैं पागल नहीं हुआ हूँ। सचमुच अपनी सारी जायदाद गोद के लड़के को दे जाऊँगा। साइत नहीं बनी, नहीं तो अब तक कब का लड़का गोद ले लिया होता। इतना बड़ा पाजीपन कि ईसाइन औरत के आगे मेरी बेइज़्ज़ती की! लात मारकर देवता का कलस तोड़ डाला, और बाम्हन की चोटी उखाड़ डाली!

साधु०—लाख हो, वह तुम्हारा लड़का है, उसे माफ़ करो और जायदाद किसी दूसरे को मत दो। मेरी तो भाई, यही सलाह है।

मूसल०—अगर वह अपने किए पर पछताकर मुझसे माफ़ी माँगने आता, तो भी एक बात थी—मैं माफ़ भी कर देता—

(हिंदोस्तानी वेष में रामजी का प्रवेश)

रामजी—(पैरों पर गिरकर) पिताजी, मैं सचमुच अपने किए पर पछताकर आज आपसे माफ़ी माँगने आया हूँ। क्या आप अपने नालायक़ लड़के को माफ़ नहीं करेंगे? मैं निर्लज्ज हूँ, इसी से ऐसा पाजीपन करके भी आपको मुँह

दिखाने आया हूँ। मैं आपका लड़का होने का दावा नहीं कर सकता—गुलाम की तरह आपसे दया की प्रार्थना करता हूँ।

मूसल०—(पुत्र को उठाकर गले से लगाकर) आओ बेटा—मैंने तुम्हें माफ़ किया।—भाई साधु, आज कैसी खुशी का दिन है!—हे परमेसुर, तुम्हारी लीला अपरंपार है!

साधु०—सच है! हे जगत्पिता जगदीश्वर! तुम्हारी इच्छा को कोई नहीं जान सकता। तुमने अमृत देने के लिये ही सागर मथते समय हलाहल पहले निकाला था। सुख के लिये ही तुमने दुःख की सृष्टि की है। ज्ञान के लिये पाप है, और फिर उस पाप को दूर करने के लिये प्रयश्चित्त!

गीत

दयामय हरि सुख-दुख-दाता।
तुम बिन किसका कौन कहाँ है पुत्र, पिता या माता;
नेत्र हृदय के खोलो सबके तुम ही भाग्य-विधाता।
पाप-पुण्य का ज्ञान न मुझको, धर्म-अधर्म न मानूँ;
चलूँ सदैव तुम्हारे पथ में, केवल तुमको जानूँ।

(परदा बदलता है)

उज्ज्वल प्रकाश का परदा

[देशी पहनावे में ऐंग्लिसाइज़्ड रमणियाँ]

गीत

[कोर्निश]

ए लो नाक पकड़ी, कान पकड़े, आज ;
अब कभी हम नहीं करेंगी मेमों का-सा साज।
चा की प्याली, गार्डनपार्टी,
कर दिया घर बिल्कुल मट्टी,
चाल विदेशी चलने को जो कहे, गिरे उसके सिर गाज ;
तुम सब देसी, देसी रहकर, मातृभूमि की रक्खो लाज।
मातृभूमि की रक्खो लाज।
ए लो नाक पकड़ी, कान पकड़े, आज।

(इत्यादि)

[यवनिका-पतन]